जैन दिवाकर स्मृति ग्रंथ (फोल्डर नं. ९१२०२१)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

अपनी बात

शुभकामना सन्देश

अनुक्रमणिका

प्रथम विभाग – एक पारस-पुरुष का गरिमामय जीवन

एक शाश्वत धर्म-दिवाकर ---------- १

उद्भव-एक कल्पांकुर का ----------८

उदय-धर्म दिवाकर का ----------२१

द्वितीय विभाग-घटनाओं में बोलता व्यक्तित्व-स्मृतियों के स्वर

वाणी के देवता ---------- १०५

वशीकरण मन्त्र---------- १०७

सन्त वाणी का असर ---------- १०८

अनुभूत प्रसंग ---------- १०९

समय की बात ---------- १११

व्यक्तित्व की अमिट छाप ----------११२

अन्तिम दर्शन ----------११३

नजर भर देखा तो ---------- ११७

लोहामण्डी सोनामण्डी बन गई ----------११८

अफीम भी गुड़ बन गया ---------- १२०

आध्यात्मिक ज्ञान की जलती हुई मशाल ---------- १२२

क्या ये चमत्कार नहीं है ---------- १२८

क्या चौथामलजी महाराज पधारे हैं ---------- १२९

जैसी करनी-वैसी भरनी ---------- १३०

पाँच मिनट में भीड़ ----------१३१

युग का एक महान् चमत्कार ---------- १३२

तृतीय विभाग-अहिंसा और सदाचार की प्रेरणा के साक्ष्य – ऐतिहासिक दस्तावेज ---------- १३३-१७२

चतुर्थ विभाग – शाश्वत दिवाकर को श्रद्धा का अर्घ्य – भक्ति भरा प्रणाम

शताब्दी पुरुष को प्रणाम ---------- १७३

हमारी सच्ची श्रद्धांजलि ---------- १७४

चौथ मुनि चारु चतुर ---------- १७५

जगवल्लभ जैन दिवाकर ---------- १७६

देखा मैंने ---------- १७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक महकता जीवन पुष्प ---------- १७८
वह कालजयी इतिहास पुरुष ---------- १७९
पवित्र प्रेरणा---------- १८०
मुनिवर तुमने जन-मानस में ----------१८१
जन-जन के हृदय मन्दिर के देवता ---------- १८२
शत-शत तुम्हें वन्दन ---------- १८३
युगप्रवर्तक श्री जैन दिवाकरजी ---------- १८४
गंगारामजी री आंख्यां रा उजाला रो ---------- १८५
सच्चे सन्त और अच्छे वक्ता ---------- १८७
विश्व वन्दनीय जैन दिवाकर ---------- १८९
शतशः प्रणाम ---------- १९०
धण्णो य सो दिवायरो ---------- १९१
नयनों के तारे ---------- १९१
श्रद्धा के सुमन ---------- १९२
गीत ---------- १९२
बहुमुखी प्रतिभा के धनी ---------- १९३
जिनके पद में ---------- १९४
एक क्रांतदर्शी युग पुरुष ---------- १९५
महायोगी को वन्दन ---------- १९५
जैन दिवाकर ज्योति ---------- १९६
जैन दिवाकर-जग दिवाकर ---------- १९७
श्रद्धा सुमन ---------- १९७
सन्त परम्परा की एक अमूल्य निधि ---------- १९८
श्रद्धा के दो सुमन ---------- १९८
प्रेम की हिलोरेमें उठी ---------- १९९
परोपकारी जीवन ---------- १९९
भावांजली ---------- २००
एक अद्भुत पुरुष ---------- २००
जीवन के सच्चे कलाकार ---------- २०१
वन्दना---------- २०१
प्रणाम, एक सूर जको ---------- २०२
जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म ---------- २०४
सफलजीवन का रहस्य ---------- २०५
विराट व्यक्तित्व के धनी ---------- २०६
हे जन जागृति के दिव्य दूत ---------- २०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन दिवाकर दिव्य द्वादशी ---------- २०८
सम्पूर्ण मानवता के दिवाकर ---------- २०९
दिवाकर-एक आधार ---------- २०९
शत-शत प्रणाम ---------- २१०
अद्भुत योगी ---------- २१०
धर्मज्योति को नमन ----------२११
तेजस्वी पुण्यात्मा ---------- २१२
अहिंसा धर्म के महान् प्रचारक ---------- २१२
उच्चकोटि के व्याख्यानदाता ---------- २१३
चौमुखी व्यक्तित्व के धनी ---------- २१४
पतितोद्धारक सन्त ---------- २१४
शुभ कामनाएं और प्रणाम ---------- २१४
दुःखियारों के परम सखा ---------- २१५
वात्सल्य के प्रतीक ---------- २१५
जाज्वल्यमान नक्षत्र ---------- २१५
एकता-करुणा-संवेदना की त्रिवेमी ---------- २१५
लोकोपयोगी के अवसर पर व्यक्तित्व कुछ श्रद्धांजलियाँ ---------- २१६-२१७
श्रद्धा के सुमन ---------- २१७
जय बोलो जैन दिवाकर की ---------- २१८
जैन जग के दिवाकर की ---------- २१८
मानवता की सेवा में निरत ---------- २१९
जीवित अनेकान्त ---------- २२१
जैन दिवाकर ---------- २२२
एक देवदूत की भूमिका में ---------- २२३
उनकी अविनाशी यश ---------- २२४
वन्दन तुमको ---------- २२४
अभिनन्दन ---------- २२५
भारत के नूर थे ---------- २२५
केवल स्मृतियाँ शेष ---------- २२६
दिवाकर ---------- २२७
भाव-प्रणति ---------- २२८
जैन दिवाकर अभिननदन है---------- २२९
अपनी आप मिसाल थे ---------- २३०
श्री जैन िवाकरजी म. का समाज के प्रति योगदान ---------- २३१
सद्धंजली ---------- २३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महामानव ---------- २३३
वर समणो जिण दिवायरो ---------- २३४
दिवाकर पचीसी ---------- २३५
गुलाब-सा सुरभित जीवन ---------- २३७
पूज्य गुरुदेव जैन दिवाकरजी---------- २३७
वन्दना---------- २३८
श्री चौथमलजी महाराज को सम्प्रदाय में न बाँधे ---------- २४१
दिवाकर स्तुति ---------- २४१
अनुकरणीय आदर्श-शतशः नमन ---------- २४२
जैन दिवाकर-दिवाकर का योग ---------- २४२
वन्दना हजार को ---------- २४३
दिव्य ज्ञान की खान ---------- २४३
तप त्याग की महान् ज्योति ---------- २४४
हीरे की कनी थी ---------- २४४
सार्थक नाम ---------- २४५
भक्त सहारे ---------- २४५
जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमलजी जित् प्रशस्ति ---------- २४६
जैन दिवाकर-जग दिवाकर ---------- २४७
श्रद्धार्चन ---------- २४७
एक अद्भुत फूल था ---------- २४८
ज्योतिर्मान गुरुदेव ---------- २४८
जैन दिवाकर पंच पंचाशिका ---------- २४९
दिवाकर श्रद्धांजलि ---------- २५५
गीत ---------- २५६

पंचम विभाग-जैन दिवाकर व्यक्तित्व की बहुरंगी किरणें

महामहिम जैन दिवाकरश्री चौथमलजी महाराज ---------- २५७
मुनि श्री चौथमलजी-एक विलक्षण समाज शिल्पी ---------- २५८
युग पुरुष जैन दिवाकर जी महाराज ---------- २६२
श्रद्धा सुमन ---------- २७०
ज्योतिवाही युग-पुरुष श्री चौथमलजी महाराज ---------- २७१
एक पारस-पुरुस श्री जैन दिवाकरजी ---------- २७४
एक सम्पूर्ण सन्त पुरुष---------- २७६
जैन दिवाकर जी महाराज की कुछ यादें ---------- २८१
समाज-सुधार के अग्रदूत ---------- २८३
विश्वमानव मुनि श्री चौथमलजी महाराज ---------- २९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथमल-एक शब्दकथा ---------- २९७
सन्तों की पतितोद्धारक परम्परा और मुनिश्री चौथमलजी महाराज ---------- २९९
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, गुरुदेव श्री जैन दिवाकर जी ---------- ३०६
लोक-चेतना के चिन्मय खड्गलाड़ी ---------- ३१५
श्री जैन दिवाकरजी महाराज की संगठनात्मक शक्ति के जीवित स्मारक ---------- ३१८
भारत के एक अलौकिक दिवाकर ---------- ३२२
सामाजिक समता के स्वप्न द्रष्टा ---------- ३२६
श्रमण-परम्परा में जैन दिवाकर जी महाराज का ज्योतिर्मय व्यक्तित्व ---------- ३३१
पीड़ित मानवता के मसीहा-श्री जैन दिवाकरजी ---------- ३३८
समाज-सुधार की दिशा में श्री जैन दिवाकर जी के युगान्तकारी प्रयत्न ---------- ३४३
समाज-सुधार में सन्त परम्परा एवं श्री जैन दिवाकरजी महाराज ---------- ३४९
अन्त्योदय तथा पतितोद्धार के सफल सूत्रधार ---------- ३६०
साहित्य में सत्यं शिवं सुन्दरं के संस्कर्ता ---------- ३६३
जैन इतिहास के एक महान् प्रभावक तेजस्वी सन्त ---------- ३७५
श्री जैन दिवाकरजी महाराज के सुधारवादी प्रयत्न राजनैतिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य ---------- ३८२
संस्कार परिवर्तन तथा सुसंस्कार निर्माण में श्री जैन दिवाकरजी का योगदान ---------- ३८७
दृढ़ निश्चयी पथ-प्रदर्शक सन्त ---------- ३९२
मुनि श्री चौथमलजी महाराज के काव्य में सामाजिक चेतना के स्वर ---------- ३९५
मानव धर्म के व्याख्याता श्री जैन दिवाकरजी महाराज ---------- ४०१
गुरु आत्मा के साथी ---------- ४०४

षष्ठम विभाग – हृदयस्पर्शी और ओजस्वी प्रवचन कला – एक झलक

श्री चौथमलजी महाराज की प्रवचन कला ---------- ४०५
प्रसिद्धवक्ता श्री जैन दिवाकर जी महाराज के प्रेरक प्रवचनांश ---------- ४११
वाणी के जादूगर श्री जैन दिवाकर जी महाराज ---------- ४१८
विचारों के प्रतिबिम्ब ---------- ४२१

सप्तम विभाग-भक्ति, उपदेश, वैराग्य और नीति की स्वर चेतना गुम्फित में

भक्ति-स्तुति प्रधान पद ---------- ४२९
वैराग्य-उपदेश प्रधान पद ---------- ४३७

अष्टम विभाग - चिन्तन के विविध बिन्दु-धर्म, दर्शन, संस्कृति इतिहास

आत्मा-दर्शन और विज्ञान की दृष्टि में – श्री अशोककुमार सक्सेना ---------- ४४९
आत्मसाधना में निश्चयनय की उपयोगिता – श्री सुमेर मुनिजी ---------- ४५७
नयवाद-विभिन्न दर्शनों के समन्वय की अपूर्व कला – श्रीचन्द चोरड़िया ---------- ४६५
श्रुतज्ञान एवं मतिज्ञान-एक विवेचन – डॉ. हेमलता बोलिया ---------- ४७५
जैन परम्परा में पूर्वज्ञान-एक विश्लेषण – मुनिश्री नगराजजी ---------- ४७९
सदाचार के शाश्वत मानदण्ड और जैन धर्म – डॉ. सागरमल जैन ---------- ४८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईश्वरवाद बनाम पुरुषार्थवाद – डॉ. कृपाशंकर व्यास ---------- ५०१
कर्म-बन्धन एवं मुक्ति की प्रक्रियाएँ – मुनिश्री समदर्शीजी ---------- ५०७
जैन-दर्शन में मिथ्यात्व और सम्यक्त्व-एक तुलनात्मक विवेचन – डॉ. सागरमल जैन ------- ५१९
जैन साहित्य में गाणितिक संकेतन – डॉ मुकुटबिहारीलाल एम. ---------- ५४९
ऐतिहासिक चर्चा-धर्मवीर लोंकाशाह – डॉ. तेजसिंह गौड़ ---------- ५५६
श्री जैन दिवाकरजी महाराज की गुरु परम्परा - श्री मूलमुनिजी ---------- ५६९
परिशिष्ट – सहयोगी परिचय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org